Edit with WPS Office

प्रस्तुति : पूजा भगत

कर चले हम फिदा कविता की मूल भावना

कर चल हम फिदा कावता का भावाथ : प्रस्तुत पाक्तया में कैफ़ी आज़मी जी ने युद्ध में शहीद होने वाले एक सैनिक के अंतिम क्षणों की मनोदशा का वर्णन किया है। युद्ध-भूमि में शहीद हो रहे सैनिक अपनी अंतिम सांसों को समेट कर दूसरे सैनिक साथियों से कहते हैं कि हमने तो अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। अब देश की रक्षा का भार तुम्हारे हाथों में है।

मृत्यु को सामने देखकर भी हमने अपने कदम पीछे नहीं हटाए और मातृभूमि के सारे दुश्मनों का डट कर सामना किया। हमें हमारे सिर कटने का भी कोई गम नहीं है, बल्कि हमें इस बात का गर्व है कि हमने हिमालय (भारत माता) का सिर झुकने नहीं दिया। अर्थात् हमने दुश्मनों को अपनी सीमा में प्रवेश नहीं करने दिया। अब हम दूसरी दुनिया में जा रहे हैं, देश की रक्षा अब तुम्हें करनी है।

Edit with WPS Office

कर चले हम फिदा कविता का भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में एक सैनिक दूसरे से कह रहा है कि हमें जीने के लिए हजारों अवसर मिलते हैं, परन्तु शहीद होने के ऐसे शुभ अवसर कभी-कभी ही नसीब होते हैं। ऐसी जवानी ही क्या जिसने कभी दूसरों की भलाई के लिए त्याग या बलिदान ही ना किया हो। जो जवान खून से नहाया न हो, वह भला कैसे अपने प्यार की मर्यादा की रक्षा करेगा। आज धरती किसी दुल्हन के समान है, जिसकी मान-मर्यादा हमारे हाथों में हैं। हमें अपने रक्त की एक-एक बूंद बहाकर भी इसके मान-सम्मान को बचाए रखना है। मैं तो मृत्यु को प्राप्त होने वाला हूँ, इसलिए अब यह आपका कर्तव्य है।

Edit with WPS Office

कर चले हम फिदा कविता का भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कैफ़ी आजमी जी एक शहीद होते हुए सैनिक के माध्यम से देश के बहादुर सैनिकों को यह संदेश देते हैं कि हमें सीमा पर अपने खून से लक्ष्मण रेखा खींच देनी है, ताकि दुश्मन रूपी रावण हमारी सरज़मीं पर कदम भी ना रख सके। कवि यहाँ भारतवर्ष की तुलना सीता माता से करते हुए कहते हैं कि अगर कोई भी हाथ इसकी ओर उठे, तो उसे वहीं तोड़ देना चाहिए।

Edit with WPS Office

जैसे प्रभु श्री राम एवं लक्ष्मण जी ने माँ सीता को रावण से बचाया, ठीक उसी प्रकार तुम्हें भी हर हाल में भारत माता की रक्षा करनी होगी। शहीद हो रहा सैनिक अपने साथियों से आखिरी साँस लेते हुए कहता है - "मैं भले ही शहीद हो रहा हूँ, लेकिन अब वतन तुम्हारे हवाले है, इसकी हर हालत में रक्षा करना मेरे बहादुर साथियों!"